

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद

(हिन्दी परिशिष्ट)

खंड १६]

१९६४

[अंक २

अनुक्रमणिका

	पृ. सं.
१. बहुक्रम प्रतिदर्शी में अनभिन्नत अनुपाती तथा समाश्रयण आगणक जे० एन० के० राव	iii
२. अनन्त चरम सीमाओं सहित बंटनो से लिए गए प्रतिदर्शों के चरम सीमा मानों के यादृच्छिक अभिसरण के संबंध में पी० के० सैन	iii
३. सतत तथा असतत चरों के एक मिश्रित प्रतिरूप में स्थिति के लिये एक ग-प्रतिदर्श अप्राचलीय परीक्षण शशिकला सुखात्मे	iv
४. तीन तथा चार प्लॉट संवर्गों सहित चक्रक समनुविधान के संबंध में ए० एस० चोपडा तथा एम० एन० दास	v
५. अपूर्ण इष्टका वाले समनुविधानों का सम्मिलित विश्लेषण एस० एस० स्वामीनाथन् तथा एम० एन० दास	vi

	पृ. सं.
६. द्विमार्ग वर्गीकरण में प्रसरण अनुपातों के बंटन का लग्वायर गुणनफल श्रेणी द्वारा विस्तार ...	vi
एम० एल० टीकू	
७. समुदाय के माप के अनुपातिक सम्भाव्यता सहित प्रतिदर्शी के संबंध में	vii
देसराज	

बहुक्रम प्रतिदर्शी में अनभिन्नत अनुपाती तथा

समाश्रयण आगणक

जे० एन० के० राव

आइवा राज्य विश्वविद्यालय

सारांश

हाल ही में अनभिन्नत अनुपाती तथा समाश्रयण आगणकों के रचने की समस्या ने काफ़ी मात्रा में अनुसन्धान कार्यकर्त्ताओं का ध्यान आकर्षित किया है। साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शी के लिये इस समस्या पर मिके (१९५९) द्वारा विचार किया गया है तथा स्तरित एवम् द्विक्रम प्रतिदर्शी के लिये इस का विस्तार रोस (१९६०), नीटू (१९६१), तथा विलयमस (१९६१-६२) द्वारा किया गया है। वर्तमान लेख का उद्देश्य मिके की विधि को द्विक्रम प्रतिदर्शी के लिये विस्तृत करना तथा अनभिन्नत अनुपाती तथा समाश्रयण आगणकों की दो विभिन्न श्रेणियों का निर्माण करना है। यह भी दर्शाया गया है कि इन से विलयमस तथा रोस के आगणक कैसे व्युत्पन्न किये जा सकते हैं तथा एक अधिक व्यापक आगणक भी प्राप्त किया गया है। साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शी में अनभिन्नत अनुपाती तथा समाश्रयण आगणकों के लिये गुडमैन तथा हार्टले (१९५८) द्वारा प्रस्तुत विचरण आगणन की विधि के अनुरूप एक साधारण विधि दी गयी है।

अनन्त चरम सीमाओं सहित बंटनो से लिए गए प्रतिदर्शों के

चरम सीमा मानों के यादृच्छिक अभिसरण के संबंध में

पी० के सेन

कलकत्ता विश्वविद्यालय

सारांश

इस लेख में प्रतिदर्श सीमा मानों का तदनुसार लाक्षणिक सीमा मानों तक यादृच्छिक अभिसरण तथा उनके केन्द्रीय धूर्णों का तदनुसार

सीमांत बंटनो के धूर्णों तक अनन्तस्पर्शीय अभिसरण का अध्ययन, घातीय तथा कौशी रूपी मूल बंटनों के लिये किया गया है। अनेक प्रतिदर्शी अपराचलीय परीक्षणों की एक श्रेणी जोकि विरल वृद्धियों की संख्या पर आधारित हो, की संगति तथा अनन्त स्पर्शीय शक्ति दक्षता के अध्ययन के लिए यह निष्कर्ष बहुत उपयोगी प्रतीत होते हैं।

सतत तथा असतत चरों के एक मिश्रित प्रतिरूप में स्थिति के लिये एक ग-प्रतिदर्श अप्राचलीय परीक्षण

शशिकला सुखात्मे

नई दिल्ली

सारांश

मानलो कि एक $(g + 1)$ - चर वंटन में

$ला_{श} = (रा_{श}, या_{१श}, या_{२श}, \dots, या_{गश})$ श = १, २, ..., ग
स्वाधीन प्रेक्षण हैं। जब कि श के प्रत्येक मूल्य के लिये,

$$या_{शष} = \begin{cases} 0 & \text{या } १, \text{ य } या_{षश} = १, \\ & \text{ष} = १ \end{cases}$$

$$स \{ या_{शष} = १ \} = त_{ष},$$

$$स \{ या_{शष} = 0 \} = १ - त_{ष}, \text{ य } त_{ष} = १$$

तथा

$$स \{ रा \leq r / या_{ष} = १ \} = चा_{ष}(r), \text{ } \text{ष} = १, २, \dots, ग।$$

जब कि वंटन फलनों $चा_१, चा_२, \dots, चा_ग$ में केवल स्थिति प्राचल में मिलता हो उस दशा में $चा_१ = चा_२ = \dots = चा_ग$ उपकल्पना की परीक्षा के लिये एक, मध्यका परीक्षण प्रस्तुत किया गया है तथा इसके गुणों

का अध्ययन किया गया है। उस दशा में जब की त_प इत्यादि अज्ञात हों परीक्षा प्रतिदर्शज में त_प के इत्यादि के वास्तविक मूल्यों को उनके सामान्य आगणकों द्वारा बदलकर शोधन किया गया है तथा यह सिद्ध किया गया है कि इस प्रकार शोधित किया गया परीक्षण अनंतस्पर्शीय वटन रहित है।

तीन तथा चार प्लेट संवर्गों सहित चक्रक समनुविधान के संबंध में

ए० एस० चोपडा तथा एम० एन० दास, आई०ए०आर०एस०
नई दिल्ली

सारांश

कारकों की प्रत्येक संख्या के लिये अपूर्ण संवर्ग समनुविधान प्राप्त करने के प्रयत्न में चक्रक समनुविधानों के विश्लेषण का प्रश्न दास द्वारा प्रस्तावित किया गया था तथा दो प्लेटों वाले संवर्ग समनुविधान का समाधान भी किया गया था। अब उसका समनुविधान तीन तथा चार प्लेटों वाले संवर्गों के लिये किया गया है। आन्तरिक संवर्ग विश्लेषण को शीघ्रता से प्राप्त करने के लिये आवश्यक सारणिया तैय्यार तथा प्रस्तुत की गई हैं। दो प्लेटों वाले संवर्ग तथा जिस में एक से अधिक प्रारंभिक संवर्ग हों उन समनुविधानों की एक विशेष श्रेणी का अनुसन्धान किया गया है। अधिक दक्ष प्रकार के तीन प्लेटों वाले संवर्गों के समनुविधानों की एक अतिरिक्त श्रेणी का भी अनुसन्धान किया गया है।

अपूर्ण इष्टका वाले समनुविधानों का सम्मिलित विश्लेषण

एस० एस० स्वामीनाथन्

रवड़ मंडल, कोटायाम, केरल

तथा

एम० एन० दास

भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्था, नई दिल्ली

सारांश

इस लेख में एक जैसे कारकों सहित विभिन्न सन्तुलित अपूर्ण इष्टका वाले समनुविधानों का सम्मिलित विश्लेषण दिया गया है। इस स्थिति का विस्तार कई समूह विभाज्य समनुविधानों (उन्हीं प्राचलों सहित) के सम्मिलित विश्लेषण के लिये किया गया है जबकि कारकों के एक या एक से अधिक समूह इन सब समनुविधानों में वही हों।

द्विमार्ग वर्गीकरण में प्रसरण अनुपातों के बंटन का लग्वायर गुणनफल श्रेणी द्वारा विस्तार

एम० एल० टीकू

एबर्डीन विश्वविद्यालय, यू०के०

सारांश

प्रसरण विश्लेषण के लिए द्विमार्ग वर्गीकरण के प्रसरण अव्यवों के बंटन का एक औपचारिक लग्वायर गुणनफल श्रेणी द्वारा विस्तार किया गया है। प्रसरण अनुपातों के बंटनों के सन्निकटन प्राप्त किए गए हैं। "कतारों" तथा "परस्परक्रिया" से संबंधित प्रसरण अनुपातों के बंटनों पर मूल "अधिकता" तथा "वैषम्य" के प्रभाव का संख्यात्मक अध्ययन किया गया है।

समुदाय के माप के अनुपातिक सम्भाव्यता सहित प्रतिदर्शी के संबंध में

देसराज

यूनानी राष्ट्रीय सांख्यिकी सेवा

सारांश

प्रतिदर्शी प्रविधि जिस में प्रतिदर्श समुदाय के माप के अनुपातिक सम्भाव्यता सहित छांटा जाता है (पपास) का अन्तर्गत सिद्धांत मिडजुनों (१९५०), लहेरी (१९५१), राज (१९५४) तथा सैन (१९५५) के द्वारा दिया गया है। यह लेख इस प्रविधि की सूक्ष्मता से संबंधित कुछ परिणाम प्रस्तुत करता है। यह विचार विमर्श उसी स्थिति तक सीमित हैं जिस में एक स्तर से चुने गये दो एकाकों (झुंडों) की पूर्ण परिगणना की गयी है।